ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 312-316
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

बिहार में सूफीवाद के अध्ययन के प्रमुख फारसी स्रोतः एक समीक्षा

मो0 इमतेयाज
असि0 प्रोफेसर– इतिहास विभाग, श्री राम संस्कृत कालेज, विजयीपुर– गोपालगंज (बिहार) भारत

Received-14.06.2024 Revised-21.06.2024, Accepted-27.06.2024 E-mail: imtyaz1950@gmail.com

***सारांशः** मध्यकालीन भारत में सूफी आंदोलन ने धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। उत्तर भारत में बिहार सूफीवाद का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा, जहाँ मनेर, बिहार शरीफ़, मुंगेर और भागलपुर जैसे स्थानों पर विभिन्न सूफी सिलसिलों, विशेष रूप से फिरदौसिया, सुहरावर्दिया, चिश्तिया और कादरिया, का व्यापक प्रभाव रहा। बिहार में सूफी आंदोलन के इतिहास और विचारों को समझने के लिए फारसी भाषा में रचित समकालीन एवं उत्तर–समकालीन ग्रंथ प्राथमिक और प्रामाणिक आधार प्रदान करते हैं।*

यह लेख बिहार में सूफीवाद के अध्ययन के लिए उपलब्ध प्रमुख फारसी साहित्यिक स्रोतों की एक विस्तृत एवं समीक्षात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है। इन स्रोतों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है: मक्तूबात (सूफी संतों के पत्र–संग्रह), मलफूजात (सूफी संतों के उपदेश एवं संवाद संग्रह), और तज़किरा (सूफी संतों की जीवनियाँ)। आलेख में शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी के 'मक्तूबात–ए–सद्दी', 'मअदनुल मआनी', और 'तज़किरातुल अबरार' जैसे प्रमुख फारसी ग्रंथों का विशेष विश्लेषण किया गया है। यह समीक्षा स्पष्ट करती है कि ये ग्रंथ न केवल सूफी दर्शन, अध्यात्म और नैतिक शिक्षाओं को उजागर करते हैं, बल्कि तत्कालीन बिहार की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और भाषाई स्थिति का अध्ययन करने के लिए भी ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत मूल्यवान हैं।

कुंजीभूत शब्द– सूफीवाद, सूफी आंदोलन, धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन, मक्तूबात, मलफूजात, तज़किरा।

१. प्रस्तावना (Introduction)– मध्यकालीन भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास में सूफीवाद (तसव्वुफ़) एक ऐसी धारा के रूप में प्रकट हुआ जिसने विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के बीच समन्वय, सहअस्तित्व और भ्रातृत्व की नींव रखी। बिहार इस आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्रांति का एक सशक्त केंद्र था। १२वीं और १३वीं शताब्दी से ही बिहार की पावन भूमि पर विभिन्न सूफी संतों का आगमन शुरू हो गया था। शेख ताजुद्दीन नौशा (मनेर), मख्दूम शाह शहाबुद्दीन पीर जगजोत (जेठुली), हज़रत मख्दूम यह्या मनेरी, और उनके महान पुत्र हज़रत मख्दूम–ए–जहाँ शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी जैसे सूफियों ने बिहार को आध्यात्मिक चेतना का मुख्य केंद्र बना दिया।

बिहार में सूफीवाद की जड़ें इतनी गहरी थीं कि यहाँ कई सिलसिले पल्लवित हुए, जिनमें फिरदौसिया सिलसिला सबसे अधिक प्रभावशाली रहा। इस सिलसिले को बिहार में स्थापित करने और पूरे भारत में लोकप्रिय बनाने का श्रेय शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी को जाता है। इसके अतिरिक्त, सुहरावर्दिया, चिश्तिया, कादरिया और शत्तारी सिलसिलों का भी बिहार में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

सूफी आंदोलन के इतिहास, उनकी विचारधारा, उनके सामाजिक प्रभाव तथा उनके और तत्कालीन दिल्ली सल्तनत व प्रांतीय शासकों के संबंधों को समझने के लिए प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोतों की आवश्यकता होती है। यद्यपि दरबारी इतिहासकार (जैसे ज़ियाउद्दीन बरनी, शम्स–ए–सिराज़ अफीफ आदि) राजनीतिक घटनाओं का विवरण देते हैं, लेकिन वे आम जनता के जीवन और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डालते। इस कमी को सूफियों द्वारा रचित या उनके शिष्यों द्वारा संकलित फारसी साहित्य पूरा करता है। मध्यकाल में फारसी बिहार की प्रशासनिक और साहित्यिक भाषा थी। इसलिए सूफियों की अधिकांश मौखिक शिक्षाएँ, पत्र और जीवनियाँ इसी भाषा में लिपिबद्ध की गईं। प्रस्तुत समीक्षात्मक लेख बिहार में सूफीवाद के इतिहास को समझने वाले इन्हीं प्रमुख फारसी स्रोतों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है।

२. बिहार में सूफी साहित्य का स्वरूप और वर्गीकरण (Nature - Classification)– बिहार के सूफियों द्वारा निर्मित फारसी साहित्य केवल आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है; यह तत्कालीन समाज का एक विशद दर्पण भी है। सूफी साहित्य का स्वरूप गैर–दरबारी, निष्पक्ष और जन–उन्मुख था। सूफियों ने अपने विचारों को फैलाने के लिए लेखन को एक सशक्त माध्यम बनाया। बिहार में सूफीवाद के अध्ययन के लिए फारसी स्रोतों को मुख्यतः निम्नलिखित चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

फारसी सूफी साहित्य का वर्गीकरण

मक्तूबात (पत्र) मलफूजात (संवाद) तज़किरा (जीवनी) इल्मी/अख़लाक़ी (सैद्धांतिक ग्रंथ)

१. मक्तूबात (Maktubat – पत्र–संग्रह): सूफी शेखों द्वारा अपने शिष्यों, मुरीदों, समकालीन विद्वानों, या शासकों को लिखे गए पत्रों का संकलन। इनमें सूफी दर्शन, व्यावहारिक अध्यात्म, और सामाजिक मार्गदर्शन का विशद विवरण मिलता है।

२. मलफूजात (Malfuzat – मजलिसों के संवाद/उपदेश): सूफी शेखों की खानकाहों में आयोजित सभाओं (मजलिस) में दिए गए उपदेशों और शिष्यों के प्रश्नों के उत्तरों का उनके शिष्यों द्वारा किया गया दैनिक या नियमित संकलन।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

३. तज़किरा (Tazkira – सूफी जीवनियाँ एवं संस्मरण): बाद के विद्वानों द्वारा विभिन्न सूफियों के जीवन, उनके चमत्कारों (करामात), उनकी वंशावली और उनकी शिक्षाओं का संकलित विवरण।

४. इल्मी व अख़लाक़ी ग्रंथ (Theoretical - Ethical Literature): सूफी संतों द्वारा स्वयं लिखे गए दार्शनिक, सिद्धांतवादी या आचार–संहिता संबंधी ग्रंथ।

३. प्रमुख फारसी स्रोतों का समीक्षात्मक विश्लेषण (Critical Analysis)–

३.१ मक्तूबात साहित्य (Sufi Epistles): बिहार के सूफी साहित्य में मक्तूबात का स्थान सर्वोच्च है। विशेषकर फिरदौसिया सिलसिले के संतों ने पत्रों के माध्यम से आध्यात्मिक एवं सामाजिक शिक्षा देने की एक अनूठी परंपरा विकसित की।

(क) मक्तूबात–ए–सद्दी (Maktubat-i-Saddi/१०० पत्रों का संग्रह): यह ग्रंथ बिहार ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय सूफी साहित्य की सबसे महान कृतियों में से एक है। लेखक/रचयिता हज़रत शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी है। संकलनकर्ता ज़ैन बदर अरबी (शेख के प्रमुख शिष्य) है। रचना कालः १३४६–१३४७ ई. (७४७ हिजरी)। विषय–वस्तुः यह पत्र–संग्रह शेख शर्फुद्दीन द्वारा अपने प्रिय शिष्य और मुक्ती (शासक) क़ाज़ी शमसुद्दीन को लिखे गए १०० पत्रों का संकलन है।

समीक्षात्मक विश्लेषणः 'मक्तूबात–ए–सद्दी' में तौहीद (एकेश्वरवाद), मारिफ़त (ईश्वरीय ज्ञान), नफ़्स (अहंकार) के नियंत्रण, इबादत के नियम, और सूफी आचार–संहिता की विषद व्याख्या की गई है। इसमें जटिल दार्शनिक विषयों जैसे 'वहदत–उल–वुजूद' (अद्वैतवाद) को अत्यंत सरल फारसी भाषा में समझाया गया है। सामाजिक दृष्टि से, यह ग्रंथ दर्शाता है कि कैसे एक सूफी संत एक प्रशासक को न्याय, परोपकार, और प्रजा–पालकता का पाठ पढ़ाता था। शेख स्पष्ट रूप से लिखते हैं कि केवल पूजा–पाठ ही काफी नहीं है, बल्कि पीड़ित और भूखे लोगों की सेवा करना ईश्वर की सच्ची भक्ति है।

(ख) मक्तूबात–ए–दो सद्दी (Maktubat-i-Do Saddi/२०० पत्रों का संग्रह), रचयिताः शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी। विषय–वस्तुः यह १५० से अधिक पत्रों का एक अन्य महत्त्वपूर्ण संग्रह है जो शेख ने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में विभिन्न शिष्यों, सूफियों और अधिकारियों को लिखे थे।

समीक्षात्मक विश्लेषणः इस संग्रह के माध्यम से हमें भारत के विभिन्न हिस्सों में फैले शेख के शिष्यों और खानकाही नेटवर्क की जानकारी मिलती है। इसमें तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों, धार्मिक बाह्याचारों और पाखंडों पर तीखा प्रहार किया गया है।

(ग) मक्तूबात–ए–मुज़फ़्फ़र शम्स बलखी (Maktubat-i Muzaffar Shams Balkhi)– रचयिताः हज़रत मख्दूम मुज़फ़्फ़र शम्स बलखी (शेख शर्फुद्दीन के प्रमुख उत्तराधिकारी)। विषय–वस्तुः इस संग्रह में १८१ पत्र शामिल हैं, जो उन्होंने अपने शिष्यों, राजाओं (जैसे बंगाल के सुल्तान गियासुद्दीन आज़म शाह) और समकालीन विद्वानों को लिखे।

समीक्षात्मक विश्लेषणः मुज़फ़्फ़र शम्स बलखी के पत्र राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। बंगाल के सुल्तान गियासुद्दीन को लिखे गए पत्र यह दर्शाते हैं कि सूफी संत किस प्रकार शासकों को शासन में न्याय स्थापित करने और उलेमाओं के प्रभाव को संतुलित करने की सलाह देते थे। ये पत्र बिहार और बंगाल के बीच मध्यकालीन सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों पर गहरा प्रकाश डालते हैं।

३.२ मलफूजात साहित्य (Sufi Conversations)– मलफूजात साहित्य सूफियों के प्रत्यक्ष संवादों और खानकाही जीवन की दैनिक गतिविधियों को समझने का सबसे प्रामाणिक स्रोत है।

(क) मअदनुल मआनी (Madan-ul-Ma'ani): मुख्य व्यक्तित्वः हज़रत शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी।, संकलनकर्ताः ज़ैन बदर अरबी। रचना कालः १३४८ से १३५० ई. के बीच। स्वरूपः यह ग्रंथ ६३ मजलिसों (गोष्ठियों) के विवरण का संग्रह है, जो दो विस्तृत खंडों में विभाजित है।

समीक्षात्मक विश्लेषणः 'मअदनुल मआनी' बिहार के सूफी साहित्य का मुकुटमणि माना जाता है। इसमें शेख शर्फुद्दीन द्वारा पूछे गए प्रश्नों के विस्तृत और विचारोत्तेजक उत्तर दर्ज हैं। यह ग्रंथ तत्कालीन बिहार के बौद्धिक और धार्मिक माहौल का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है। इसमें विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, दर्शनों और सामाजिक प्रथाओं पर चर्चा हुई है। इस ग्रंथ से यह भी ज्ञात होता है कि बिहार शरीफ की खानकाह में केवल मुसलमान ही नहीं, बल्कि गैर–मुस्लिम विद्वान, योगी और आम जनता भी अपनी शंकाओं के समाधान के लिए आते थे।

(ख) ख़्वान–ए–पुर नेअमत (Khwan-i-Pur Ni'mat): संकलनकर्ताः ज़ैन बदर अरबी।, विषय–वस्तुः यह शेख शर्फुद्दीन की ४५ मजलिसों (१३५० से १३६० ई.) का संकलन है।

समीक्षात्मक विश्लेषणः इस ग्रंथ का नाम 'गुणों एवं प्रसादों से भरी थाली' है। इसमें सूफी सिद्धांतों के अतिरिक्त खानकाह में आने वाले आगंतुकों के भोजन, खान–पान के शिष्टाचार, और अतिथिसत्कार पर विशेष ध्यान दिया गया है।

यह तत्कालीन बिहार के खान–पान, पहनावे, और दैनिक उपयोग की वस्तुओं के अध्ययन हेतु एक अमूल्य स्रोत है।

(ग) मुनिसुल मुरीदीन (Munis-ul-Muridin): संकलनकर्ताः सालाह मुख़लिस दाऊद ख़ानी।विषय–वस्तुः यह १३७३ ई. में आयोजित मजलिसों का संग्रह है।

समीक्षात्मक विश्लेषणः यह संकलन मुख्य रूप से नए शिष्यों (मुरीदों) के नैतिक और आध्यात्मिक प्रशिक्षण पर केंद्रित है। इसमें मन की शुद्धि, विनम्रता, और सेवा भाव पर अत्यधिक बल दिया गया है।

(घ) गंज–ए–ला–यफ़ना (Ganj-I- La-Yafna): रचयिता/संकलनकर्ताः मौलाना मुज़फ़्फ़र शम्स बलखी के उपदेशों का संग्रह।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

समीक्षात्मक विश्लेषणः यह ग्रंथ १४वीं शताब्दी के अंत में बिहार के सूफी विचारों के निरंतर विकास को रेखांकित करता है।

३.३ तज़किरा साहित्य (Biographies - Hagiographies): तज़किरा साहित्य में सूफी संतों के जीवनवृत्त, उनके वंशवृक्ष, उनकी चमत्कारिक घटनाओं (करामात), और उनके ऐतिहासिक संदर्भों का वर्णन मिलता है।

(क) मनाकिबुल अस्फिया (Manaqib-ul-Asfiya): लेखकः शाह शोएब फिरदौसी (शेख शर्फुद्दीन मनेरी के रिश्तेदार व शिष्य)।, रचना कालः १५वीं शताब्दी।

समीक्षात्मक विश्लेषणः यह फिरदौसिया सिलसिले का सबसे प्रामाणिक ऐतिहासिक और जीवनी–संबंधी ग्रंथ माना जाता है। इसमें शेख ताजुद्दीन नौशा, हज़रत यह्या मनेरी, और शेख शर्फुद्दीन मनेरी के जीवन का क्रमबद्ध इतिहास दिया गया है। यह ग्रंथ मनेर और बिहार शरीफ के सूफी केंद्रों के स्थापना काल के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण की अमूल्य जानकारी प्रदान करता है।

(ख) तज़किरातुल अबरार (Tazkirat-ul-Abrar) और मुअस्सिरुल अबरारः लेखकः बाद के सूफी विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा संकलित। विषय–वस्तुः इनमें बिहार के केवल प्रसिद्ध ही नहीं, बल्कि गुमनाम सूफियोंकृजैसे सुहरावर्दिया सिलसिले के हज़रत अहमद चिरमपोश (अंबर), शाह अताउल्लाह बुग़रा, और कादरिया व शत्तारी सिलसिले के संतोंकृके विवरण भी सुरक्षित हैं।

(ग) सफीनातुल औलिया और अख़बारुल अख़्यार (संदर्भ के रूप में): यद्यपि 'अख़बारुल अख़्यार' (अब्दुल हक़ देहलवी द्वारा रचित) पूरे भारत के सूफियों का तज़किरा है, लेकिन इसमें बिहार के सूफियों, विशेष रूप से शेख शर्फुद्दीन मनेरी और उनके शिष्यों को बहुत सम्मानजनक स्थान दिया गया है, जिससे बिहार के स्रोतों की प्रामाणिकता की पुष्टि होती है।

३.४ सिद्धांतवादी और आचार–संहिता संबंधी फारसी ग्रंथः सूफी संतों ने केवल संवाद या पत्र ही नहीं लिखे, बल्कि अध्यात्म पर मौलिक पुस्तकों की रचना भी कीः

क– इरशादुल तालिबीन (Irshad-ul-Talibin): शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी द्वारा रचित यह एक छोटा लेकिन अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, जो सूफी मार्ग (तरीकत) के साधकों के लिए एक नियमावली (Manual) के रूप में कार्य करता है।

ख– अकीदह–ए–शर्फिया (Aqidah-i-Sharfiya): यह ग्रंथ सूफी मत के मूल इस्लामिक सिद्धांतों और अकीदे (विश्वास) की फारसी में व्याख्या करता है, जिसका उद्देश्य सूफीवाद को कट्टरपंथी उलेमाओं के आक्षेपों से बचाना था।

४. बिहार के फारसी सूफी स्रोतों का बहुआयामी महत्त्व– बिहार में सूफीवाद पर लिखे गए फारसी ग्रंथों का महत्त्व केवल धार्मिक या आध्यात्मिक अध्ययन तक सीमित नहीं है। इन स्रोतों का बहुआयामी ऐतिहासिक और सामाजिक–सांस्कृतिक महत्त्व हैः

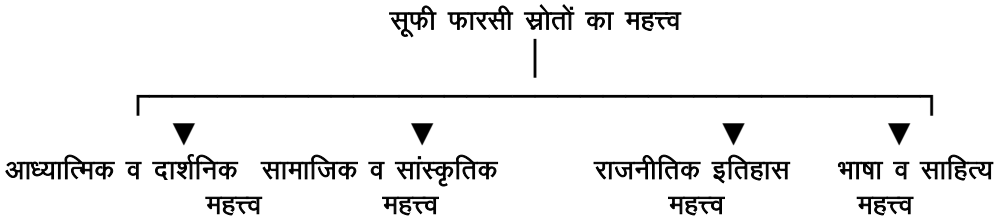

४.१ आध्यात्मिक एवं दार्शनिक महत्त्व (Spiritual - Philosophical Value): वहदत–उल–वुजूद और इस्लाम का उदारवादी रूपः इन ग्रंथों में 'वहदत–उल–वुजूद' (सर्वेश्वरवाद/अद्वैतवाद) की ऐसी व्याख्या मिलती है जो कट्टरता को खारिज करती है। शेख शर्फुद्दीन मनेरी ने ईश्वर प्रेम को ही मानवता की सबसे बड़ी सेवा माना। धार्मिक समन्वयः फारसी मक्तूबात और मलफूजात से स्पष्ट होता है कि बिहार के सूफियों ने भारतीय दर्शन, विशेषकर हठयोग, भक्ति मार्ग, और वेदांत की अवधारणाओं का गहन अध्ययन किया था। 'मअदनुल मआनी' में योगियों की प्राणायाम क्रियाओं और सूफियों के 'पास–ए–अंफ़ास' (सांसों पर नियंत्रण) के बीच की समानताओं पर चर्चा की गई है।

४.२ सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के स्रोत (Socio - Cultural History): दरबारी इतिहासकार केवल राजाओं, युद्धों और कर–प्रणाली तक सीमित रहे, जबकि सूफी फारसी साहित्य आम जनता के जीवन को उजागर करता हैः

क– जन–सामान्य की स्थितिः मलफूजात से १३वीं और १४वीं शताब्दी के बिहार में भुखमरी, अकाल, महामारी, और आम जनता पर लगने वाले करों के प्रभाव की जानकारी मिलती है।

ख– खानकाही संस्कृति और लंगरः इन स्रोतों से पता चलता है कि खानकाहें केवल आध्यात्मिक केंद्र नहीं थीं, बल्कि सामाजिक कल्याण केंद्र भी थीं। यहाँ जाति, धर्म, या वर्ग के भेदभाव के बिना सभी को 'लंगर' (निःशुल्क भोजन) मिलता था और शरण दी जाती थी।

ग– नारी जाति का स्थानः सूफी स्रोतों (जैसे मक्तूबात) में सूफी महिलाओं जैसे 'बीबी कमाल' (काको, जहानाबाद) और शेख शर्फुद्दीन की माता 'बीबी रज़िया' के उच्च आध्यात्मिक स्थान का उल्लेख मिलता है, जो दर्शाता है कि सूफी समाज में महिलाओं का सम्मानजनक स्थान था।

४.३ राजनीतिक इतिहास का पुनर्निर्माण (Political History Construction)– दिल्ली सल्तनत और प्रांतीय शासकों के संबंधः मक्तूबात और मलफूजात तुग़लक़ काल (विशेषकर मोहम्मद बिन तुग़लक़ और फ़िरोज़ शाह तुग़लक़) के दौरान बिहार की राजनीतिक स्थिति पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। उदाहरण के लिए, जब मोहम्मद बिन तुग़लक़ ने शेख शर्फुद्दीन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

मनेरी के लिए एक खानकाह और जागीर भेजी, तो शेख ने उसे स्वीकार करने में अनिच्छा व्यक्त की। यह विवरण सूफियों की स्वायत्तता और सत्ता से उनकी दूरी बनाए रखने की नीति (उज़लत) को दर्शाता है।

बंगाल और बिहार के संबंधः मुज़फ़्फ़र शम्स बलखी के पत्रों से बिहार और बंगाल के प्सलें ीप शासकों के कूटनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों की बहुमूल्य जानकारी मिलती है।

४.४ भाषा, साहित्य और स्थानीय बोलियों का विकास (Linguistic Significance)–

क– फारसी शैली का भारतीयकरणः बिहार के सूफियों ने फारसी की एक ऐसी शैली विकसित की जो अत्यंत सरल, पारदर्शी और प्रवाहमयी थी। इसे 'सबक–ए–हिंदी' (भारतीय फारसी शैली) के प्रारंभिक रूपों में देखा जा सकता है।

ख– अपभ्रंश, मगही और हिंदवी का समावेशः यद्यपि ये ग्रंथ फारसी में लिखे गए थे, लेकिन सूफी संत आम लोगों से संवाद करने के लिए स्थानीय भाषा (हिंदवी/मगही/अवहट्ट) का प्रयोग करते थे। मलफूजात में कई स्थानों पर स्थानीय कहावतों, हिंदवी पदों और दोहों का फारसी लिपि में उल्लेख मिलता है। यह बिहार की स्थानीय भाषाओं (जैसे भोजपुरी, मगही, मैथिली) के प्रारंभिक विकास के अध्ययन हेतु अमूल्य है।

५. प्रमुख फारसी ग्रंथों का तुलनात्मक चार्ट (Comparative Analysis)– ग्रंथ का नामश्रेणीरचयिता/संकलनकर्तासमय कालमुख्य विषय/ऐतिहासिक महत्त्व, मक्तूबात–ए–सद्दीमक्तूबात (पत्र) शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी (संकलनः ज़ैन बदर अरबी) १३४६–१३४७ ई.१०० पत्रों का संग्रह; सूफी दर्शन, आचार–संहिता और प्रजा–पालकता का उत्कृष्ट ग्रंथ।

मअदनुल मआनीमलफूजात (संवाद) ज़ैन बदर अरबी (शेख शर्फुद्दीन के उपदेश) १३४८–१३५० ई. ६३ मजलिसों का विवरण; धार्मिक समन्वय, योग और इस्लामिक दर्शन का गहन अध्ययन।

मक्तूबात–ए–मुज़फ़्फ़र शम्स बलखीमक्तूबात (पत्र) मुज़फ़्फ़र शम्स बलखी १४वीं शताब्दी का अंत १८१ पत्र; बिहार–बंगाल के राजनीतिक–सांस्कृतिक संबंध और सुल्तानों को मार्गदर्शन।

ख़्वान–ए–पुर नेअमतमलफूजात (संवाद) ज़ैन बदर अरबी १३५०–१३६० ई. ४५ मजलिसें; खानकाही जीवन, आतिथ्य सत्कार और तत्कालीन सामाजिक जीवन पर प्रकाश।

मनाकिबुल अस्फियातज़किरा (जीवनी) शाह शोएब फिरदौसी १५वीं शताब्दीफिरदौसिया सिलसिले के संतों का क्रमबद्ध इतिहास और जीवनवृत्त।

६. समीक्षात्मक मूल्यांकन और सीमाएँ (Critical Evaluation - Limitations)– यद्यपि बिहार में सूफीवाद के अध्ययन के लिए फारसी स्रोत अत्यंत प्रामाणिक और समृद्ध हैं, फिर भी एक इतिहासकार और शोधकर्ता के दृष्टिकोण से इन स्रोतों का उपयोग करते समय कुछ सीमाओं और सावधानियों को ध्यान में रखना आवश्यक हैः

१. अतिशयोक्ति और चमत्कार (Hagiographical Exaggerations): विशेषकर तज़किरा साहित्य में सूफी संतों की अलौकिक शक्तियों और चमत्कारों (करामात) का अत्यधिक वर्णन मिलता है। ऐतिहासिक सत्यता की खोज के लिए इन चमत्कारी विवरणों को तर्क की कसौटी पर परखना पड़ता है।

२. भाषाई सीमाः अधिकांश ग्रंथ उच्च कोटि की फारसी में लिखे गए हैं, जिनमें अरबी शब्दावली का प्रचुर प्रयोग है। अनुवाद के दौरान मूल भावों के क्षरण होने की संभावना रहती है।

३. कालानुक्रमिक अस्पष्टता (Chronological Ambiguities): कुछ मलफूजात और तज़किरों में तिथियों का सटीक उल्लेख नहीं है, जिससे घटनाओं के सही कालक्रम को निर्धारित करने में कठिनाई आती है।

४. खानकाही दृष्टिकोणः ये स्रोत मुख्य रूप से खानकाह के भीतर के वातावरण और सूफी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। कभी–कभी इनमें खानकाह से बाहर के अन्य विरोधी धार्मिक या सामाजिक वर्गों का विवरण निष्पक्ष रूप से नहीं मिल पाता। इसके बावजूद, आधुनिक इतिहासकारों (जैसे प्रोफेसर सैयद हसन असकरी, प्रो. के. ए. निज़ामी, और पॉल जैक्सन) ने यह सिद्ध किया है कि यदि इन फारसी स्रोतों का सावधानीपूर्वक और निष्पक्ष ऐतिहासिक समीक्षा के साथ अध्ययन किया जाए, तो मध्यकालीन बिहार का एक अत्यंत जीवंत और वास्तविक इतिहास सामने आता है।

७. निष्कर्ष (Conclusion)– बिहार का मध्यकालीन इतिहास सूफीवाद के अप्रतिम योगदान के बिना अधूरा है। सूफियों ने अपनी उदारवादी विचारधारा, मानवतावादी दृष्टिकोण और प्रेम के संदेश से बिहार की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना को एक नई दिशा दी। इस गौरवशाली परंपरा को समझने के लिए फारसी में रचित मक्तूबात, मलफूजात और तज़किरा साहित्य सबसे प्रामाणिक आधार स्तंभ हैं। शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी का 'मक्तूबात–ए–सद्दी' और 'मअदनुल मआनी' जैसे ग्रंथ केवल सूफी धर्मशास्त्र की व्याख्या नहीं करते, बल्कि वे तत्कालीन बिहार के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और भाषाई परिवेश को उजागर करने वाले ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। इन ग्रंथों ने साबित किया कि सूफी संत समाज से कटे हुए संन्यासी नहीं थे, बल्कि वे अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के प्रति सजग और संवेदनशील थे।

आज के समय में, जब समाज में धार्मिक सद्भाव और मानवीय मूल्यों की रक्षा की आवश्यकता है, बिहार के इन फारसी सूफी स्रोतों का अध्ययन और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। इन पांडुलिपियों के संरक्षण, उनके हिंदी एवं अंग्रेजी अनुवाद, और उन पर निरंतर उच्चस्तरीय शोध की आवश्यकता है ताकि मध्यकालीन बिहार के इस अमूल्य और समावेशी सांस्कृतिक विरासत को विश्व पटल पर सही संदर्भ में प्रस्तुत किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(क) प्राथमिक फारसी स्रोत (Primary Persian Sources)

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

1. मनेरी, शेख शर्फुद्दीन यह्या। मक्तूबात–ए–सद्दी (फारसी मूल), संपादन व संकलनः ज़ैन बदर अरबी, हस्तलिखित पांडुलिपि, खुदा बख़्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना।
2. अरबी, ज़ैन बदर। मअदनुल मआनी (हज़रत शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी के मलफूजात), २ खंड, फारसी मूल, मुद्रितः बिहार शरीफ/पटना।
3. अरबी, ज़ैन बदर। ख़्वान–ए–पुर नेअमत, फारसी पाठ, संपादनः पॉल जैक्सन, पटना।
4. बलखी, मुज़फ़्फ़र शम्स। मक्तूबात–ए–मुज़फ़्फ़र शम्स बलखी, हस्तलिखित पांडुलिपि, खानकाह–ए–मुअज़मिया, बिहार शरीफ।
5. फिरदौसी, शाह शोएब। मनाकिबुल अस्फिया, फारसी मूल, कलकत्ताः मत्तबा–ए–नूरुल अफ़ाक़, १८६५ ई.।
6. देहलवी, शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस। अख़बारुल अख़्यार फी असरारिल अबरार (फारसी), दिल्लीः मुत्तबा–ए–मुज्तबाई, १६१४ ई.।

(ख) द्वितीयक स्रोत एवं आधुनिक अध्ययन (Secondary Sources - Modern Studies)

1. Askari, S- H- Maktub and Malfuz Literature as a Source of Socio&Political History of Medieval Bihar, Khuda Bakhsh Oriental Public Library, Patna, 1981.
2. Jackson Paul- The Way of a Sufi: Sharafuddin Maneri, Idarah-i- Adabiyat-i Delli,Delhi 1987.
3. Jackson Paul- Letters from a Sufi Teacher: Maktubat-i-Saddi, Translation and Notes, Editorial Board] Delhi, 1980.
4. Nizami, K. A. Some Aspects of Religion and Politics in India during the Thirteenth Century, Aligarh, 1961.
5. निज़ामी, के. ए. भारतीय संस्कृति पर सूफी प्रभाव, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
6. असकरी, सैयद हसन। बिहार में सूफीवाद का इतिहास (हिंदी अनुवाद), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
7. Diwakar, R. R. (Ed-)- Bihar Through the Ages, Orient Longmans, Bombay, 1959.
8. Rashid, A. Society and Culture in Northern India (1200-1550 AD), Firma K. L. Mukhopadhyay, Calcutta, 1969.

*****